International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 159-162

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(4): 159-162
www.allresearchjournal.com
Received: 02-02-2016
Accepted: 05-03-2016

डॉ. अमिता
तदर्थ प्राध्यापक
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय।

Correspondence
डॉ. अमिता
तदर्थ प्राध्यापक
मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली
विश्वविद्यालय।

झाँसी की रानीः नारी सशक्तिकरण का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज

डॉ. अमिता

'झाँसी की रानी' वृन्दावनलाल वर्मा द्वारा 1946 में लिखा गया महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। तथ्यात्मकता पर आधारित होने के कारण यह उपन्यास विवरणात्मक बन गया है। उपन्यास में इतिवृत्तात्मकता आ गयी है इसीलिए औपन्यासिकता क्षीण हो गई है। लेकिन स्वराज्य के लिए लक्ष्मीबाई लड़ी और नींव का पत्थर बनी यह उपन्यास पढ़ने से सिद्ध हो जाता है। इस उपन्यास में लक्ष्मीबाई के साथ ऐसे ऐतिहासिक नारी चरित्र हैं जो नारी सशक्तिकरण के जीवंत प्रतीक हैं।

वृन्दावन लाल वर्मा के इस उपन्यास में मातृभूमि की राजनीतिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, समग्रता का सजीव चित्र उभारा गया है। उस काल खण्ड में झाँसी में युद्ध वर्णन में उपन्यासकार को पर्याप्त सफलता मिली है जिनमें स्त्रियों की भूमिका विशेष रूप से उल्लेखनीय है और वास्तव में यह वर्तमान के लिए बहुत प्रेरक है।

नारी ने बौद्धिक रूप से अपने को आदि समय से अब तक अनेक रूपों में सशक्त किया है। किन्तु शारीरिक बल, साहस और शौर्य के लिए जब हम अतीत में दृष्टि डालते हैं तो झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई का नाम स्वतः ही सामने प्रकट हो जाता है।

लक्ष्मीबाई ने न केवल अपने महल में रहने वाली स्त्रियों को सशक्त किया बल्कि गांव–नगर की अन्य कुँआरी, विवाहिता, गरीब और अमीर, निम्न जाति और उच्च जाति सभी स्त्रियों के विकास और सशक्तिकरण के अनेक प्रयास किये।

स्वराज्य के लिए रानी जनरल रोज से लड़ी थी। यह उपन्यासकार ने ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर उपन्यास में सिद्ध किया है और इस लड़ाई के लिए लक्ष्मीबाई ने एक ऐसी स्त्री सेना बनाई जो वर्षों तक स्मृति में बसी रहेगी।

उपन्यासकार ने रानी लक्ष्मीबाई को एक आदर्श पात्र के रूप में प्रस्तुत किया है। स्त्री पात्रों में सुंदर, मुंदर और काशीबाई (जो पहले दासी थी) रानी की सहेलियाँ बन गई। रानी ने स्त्रियों को दासी नहीं बनने दिया। मैत्री भावना के साथ स्त्रियों के साथ व्यवहार किया। मोतीबाई, जूही, नाटकशाला में काम करने वाली नर्तकी होने के साथ–साथ योद्धा के रूप में उपन्यास में दिखाई देती हैं। झलकारी कोरिंग, बक्शिनजू अन्य महत्त्वपूर्ण आदर्श नारी पात्र है जो रानी के साथ स्वराज्य की लड़ाई में अपने को होम कर देती हैं।

झाँसी की रानी को बचपन में मनू कहते थे। मनू बचपन से रामायण, गीता, महाभारत जैसे ग्रंथों को पढ़ती थी। उसके पिता मोरोपंत जीजाबाई, सीता, सावित्री, शिवाजी, अर्जुन, भीम, अभिमन्यु जैसे चरित्रों के बारे में उसे बताते थे। तलवार चलाना, मलखंभ, घोड़े की सवारी ये उसके बचपन के शौक थे। चार वर्ष की ही थी तभी उसकी माता भागीरथी बाई का स्वर्गवास हो गया। मोरोपंत ने मनू को बहुत प्यार के साथ पाला (लड़के से बढ़कर)। मनू के साथ नाना और रावसाहब रहते थे–

''मनू और ये दोनों लड़के साथ खेलते, खाते और पढ़ते थे। मलखंभ, कुश्ती, तलवार, बंदूक का चलाना, अश्वारोहण पढ़ना लिखना इत्यादि सब इन तीनों ने छुटपन से साथ–साथ सीखा। मनू चपल, हठीली और बहुत पैनी बुद्धि की थी। कम आयु की होने पर भी वह इन हुनरों में उन दोनों बालकों से बहुत आगे निकल गई। स्त्रियों की संगति कम प्राप्त होने के कारण वह लाज संकोच की अतीव दबन और झिझक के दूर हटती गई थी।'' [1]

सगाई होने के बाद मनू नाना और राव साहब को समझाती है ''बाला गुरु से तुमको अभी बहुत सीखना है। आया ही क्या है? मलखंभ, कुश्ती इत्यादि से शरीर को खूब कमाओ। अच्छी तरह से हथियार चलाना सीखो।'' [2]

मनू को बचपन में छबीली कहते थे। विवाह के समय दासी सुंदर मनू के पास आती है और कहती है ''आप हमारी महारानी हैं। मैं सेवा में रहूंगी। आपकी दासी होकर अपना भाग्य बढ़ाऊंगी।'' [3] इस पर रानी उसे कहती हैं–

''मेरी दासी कोई भी न हो सकेगी, मेरी सहेली होकर रहोगी।'' [4]

विवाह के बाद मनू का नाम लक्ष्मीबाई हो जाता है। रानी सुन्दर, मुंदर और काशी को समझाती हैं ''पुरुषों को पुरुषार्थ सिखाने के लिए स्त्रियों को मलखंभ कुश्ती, इत्यादि सीखना ही चाहिए। खूब तेज दौड़ना भी। नाचने गाने से भी स्त्रियों का स्वास्थ्य सुधरता है, परंतु अपने को मोहक बना लेना ही स्त्री का समग्र कर्तव्य नहीं है।'' [5]

जो नारी सहमी–सहमी सी रहती थीं–मनू उन्हें विवाह के बाद सहमेपन से मुक्त कर देती हैं–

''वह मुस्कराहट उन लड़कियों को, उन स्त्रियों को, जीवन के कोष में से कुछ दे–सा रही थी। उन लड़कियों का सहमा हुआ जी शीघ्र ही लहलहा गया।'' [6]

रानी महल की स्त्रियों को सखी बनाकर रखती हैं

''मैं तुमको दासियाँ बनाकर नहीं रखूंगी। तुम मेरी सखी सहेली बनोगी।'' [7]

ब्याह के बाद मनू अपने साथ रहने वाली दासियों को कहती।

''जो मेरे साथ रहना चाहे– उसको घोड़े की सवारी अच्छी तरह आनी चाहिए। तलवार, बन्दूक, बरछी, छुरी–कटार तीर–तमंचा इत्यादि का चलाना अच्छी तरह चलाना–सीखना पड़ेगा। दोनों हाथों से हथियार चलाना सीख जाएँ तो और भी अच्छा।'' [8]

काशी जब मनू से कहती है'' कुश्ती और मलखंभ कौन सिखलावेगा?'

मनु ने तुरंत बताया, 'जितना मैं जानती हूँ मैं सिखाऊंगी बाकी बिठूर के प्रसिद्ध आचार्य बाला गुरु। उनको यहाँ बुला लूंगा।'' जब स्त्रियों को संकोच होता है तो आगे मनू स्त्रियों को समझाती हैं'

''स्त्रियाँ दृढ़ता का कवच पहनें तो फिर संसार में ऐसा पुरुष कोई हो ही नहीं सकता, जो उनको लूट ले।'' [9]

रानी किलेवाले महल में रहती थी। लेखक ने लिखा है

''अपनी समग्र सहेलियों तथा किले के भीतर रहने वाली स्त्रियों को सवारी, शस्त्र प्रयोग, मलखंभ, कुश्ती का अभ्यास कराती थी। बचे हुए समय में धार्मिक ग्रंथों का थोड़ा सा परन्तु नियमपूर्वक अध्ययन करती। भगवत् गीता पर उनकी परम श्रद्धा थी।'' [10]

रानी के पति गंगाधर राव स्त्रियों की स्वाधीनता के हामी न थे। लक्ष्मीबाई किले के बाहर घोड़े पर नहीं जा सकती थीं। किले में भी उनकी स्वतंत्रता पर काफी बंधन था। उपन्यासकार ने लिखा है ''महल के मैदान के चारों ओर ऊँची–ऊँची कनातें लगवा दी गई जिससे उनको घोड़े की सवारी इत्यादि में बहुत अड़चन होने लगी। मलखंभ और कुश्ती का प्रबंध उनको अपने कक्ष के भीतर ही मोटे और नरम कालीनों की पर्तों पर करना पड़ा। उन्होंने अभ्यास छोड़ा नहीं। गंगाधर राव ने उनकी सहेलियों को बदलने का प्रयत्न किया, परन्तु सुंदर, मुंदर और काशी को वे नहीं हटा सके।'' [11]

राजा रानी से कहते है

''घोड़े की सवारी, कुश्ती, मलखंभ के विषय आपको और भी कुछ पसंद है या नहीं?'

रानी अवश्य। सहेलियों को अपना सा बनाना। उनको अवसर–कुअवसर पड़े पुरुषों की सहायता करने में पीछे पैर न देने की सीख देना, घर की सफाई, स्वच्छता बनाए रखना, काफी काम है।'

राजा उन सबको मोटा तगड़ा बनाकर आप क्या करने जा रही हैं?

रानी, 'अभी तो मुझको नहीं मालूम। पर देह और मन को सबल बना लेना क्या कोई कम महत्त्व का काम है?'' [12]

किले में रानी ने चैत की नवरात्रि में गौरी पूजन किया। सभी स्त्रियों को परस्पर सद्भाव सिखाती हुई रानी कहती हैं

'तुममें से कोई बहिन के बराबर हो, कोई काकी हो, कोई माई हों कोई फूकी। फूल सदा नहीं खिलते। उनमें सुगंध भी सदा नहीं रहती। उनकी स्मृति ही मन में बसती है। नृत्य–गान की भी स्मृति ही सुखदायक होती है। परंतु इन सब स्मृतियों का पोषक यह शरीर और उसके भीतर आत्मा है। उनको पुष्ट करो और प्रबल बनाओ। क्या मुझे ऐसा करने का वचन दोगी? [13]

रानी के प्रभाव से झांसी की नारियों में चेतना जागी ''स्त्रियों का ऐसा भास होने लगा जैसे उनका कोई सतत् संरक्षण कर रहा हो जैसे कोई सरंक्षक सदा साथ ही रहता हो, जैसे वे अत्याचार का मुकाबला करने की शक्ति का अपने रक्त में संचार पर रही हों।'' [14]

रानी अपने साथ झाँसी की स्त्रियों को भी व्यायाम कराती थीं

''दोनों हाथों से तलवार भांजना, बंदूक से निशाना लगाना, मलखंभ, कुश्ती इत्यादि करती थीं और अपनी सहेलियों तथा नगर से आने वाली कुछ स्त्रियों को भी ये काम सिखाती थीं।'' [15]

राजा गंगाधर राव ने जब दामोदार राव को गोद लिया तो झांसी में उत्सव हुआ। इस अवसर पर एलिस को राजा कहते हैं ''मेजर साहब, हमारी रानी स्त्री जरूर है परंतु इसमें ऐसे गुण हैं कि संसार के बड़े–बड़े मर्द इसके पैरों की धूल अपने हाथे पर चढ़ाएंगे।'' [16]

1854 के आरंभ में कम्पनी सरकार के बड़े लाट ने दामोदर की गोद का अस्वीकार किया और झाँसी को कम्पनी के राज्य में मिलाने की घोषणा कर दी। इस आशय की सूचना एलिस जब झाँसी ले आए तो उस समय रानी ने कहा वह महत्त्वपूर्ण है–

''यकायक ऊँचे परंतु मधुर स्वर में रानी ने परदे के पीछे से कहा 'मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी।' इन शब्दों से दीवाने खास गूंज गया। वायुमंडल ने उनको अपने भीतर निहित कर लिया।

भारत के इतिहास में वे शब्द पिरो दिए गए। झाँसी की कलगी में वे शब्द मणि मुक्ता बनकर चिपक गए।'' [17]

जनता में युद्ध के लिए उत्साह था और रानी की सेना में भी–

''रानी की सेना तुंरत युद्ध छेड़ देना चाहती थी, परंतु रानी ने निवारण किया। कहलवाया, 'अभी समय नहीं आया है।'' [18]

गंगाधर राव की मृत्यु के पश्चात नाना और तात्या के साथ रानी की बातचीत होती है उसमें रानी की राजनीतिक दूरदर्शिता का पता चलता है–

''जनता असली शक्ति है। मुझको विश्वास है कि वह अक्षय है। छत्रपति ने जनता के भरोसे ही इतने बड़े दिल्ली सम्राट को ललकारा था, राजाओं के भरोसे नहीं। मावले, कुणभी किसान थे और अब भी हैं। उनके हलों की मूठ में स्वराज्य की लालसा बंधी रहती है।'' [19]

उपन्यासकार ने बताया है कि रानी के शासन में कलाकारों का सम्मान था–

''कवि, चित्रकार, शिल्पी कोई भी उन्मुख नहीं जाता था। शास्त्री, याशिक, ज्योतिषी, वैद्य, हकीम इत्यादि भी पोषण पाते थे। अपनी इसी वृत्ति को वे स्वराज्य में विकसित और प्रसारित देखना चाहती थी।'' [20]

रानी मंगल और शुक्र को महालक्ष्मी के मंदिर जाया करती थी। रास्ते में जो दीन–दुखी मिलता उसकी मदद भी करती। एक दिन एक भिक्षुक ब्राह्मण सामने आ खड़ा हुआ उसने चार सौ रुपये की मांग की जिससे उसका विवाह हो जाए तो रानी ने मदद की ''देशमुख को आज्ञा दी, खजाने से इस ब्राह्मण को पाँच सौ रुपये दिलवा दो।'' [21]

रानी ने अपने जासूसी विभाग में तीन स्त्रियों को रखा हुआ था। तात्या ने कहा ''हमको अपने एक विश्वसनीय जासूसी विभाग की बड़ी आवश्यकता है।'

रानी ने मुस्कराकर कहा, 'मैनें आज स्थापना कर दी है।....मेरी ये तीन सहेलियाँ काम सीख रही हैं और कर रही हैं। मैं और स्त्रियों को भी तैयार कर रही हूं।'' [22]

मोतीबाई, जूही, दुर्गा जो नाटकशाला में काम करती थीं, रानी ने उनें जासूसी के लिए सतर्क कर दिया। नवाब अली जब मोतीबाई से कुछ सूचनाएं प्राप्त करने के प्रयास करता है तो मोतीबाई तुरंत रानी को बता देती है

''रानी ने शांत भाव से कहा 'कौन है मोती?'

'नवाब अली बहादुर।'
'मुझको को संदेह तो नवाब साहब पर पहले से ही था। क्या बात हुई?
मोती बाई ने ओर से छोर तक सब सुनाया।
रानी ने पूछा 'जूही और दुर्गा कुछ कर रही है?
मोतीबाई ने उत्तर दिया...उनसे भेद लेती हूँμ।'' [23]
रानी समय–समय भौगोलिक स्थितियों पर विचार–विमर्श करती रहती थी और स्त्रियों को सचेत करती रहती थी–
''अपनी सहेलियों के साथ भिन्न–भिन्न प्रकार की अनेक युद्ध परिस्थितियों पर वाद–विवाद करतीं।...रानी तेजी के साथ सहेलियों सहित इनपर अश्वारोहण करती। झांसी के आस–पास की भूमि का उनको राई रत्ती परिचय प्राप्त हो गया। इस भौगोलिक परिचय के क्षेत्र को वे निरंतर, अनवरत बढ़ाती रहती थीं। जो स्त्री–पुरुष उनके पास भेंट के लिए आते उन सबसे कहतीं–शरीर को इतना कमाओ कि फौलाद हो जाए।'' [24]
रानी को अंग्रेज कम्पनी की ओर से पेंशन दी जाती है और उसकी सत्ता छीन ली जाती है तो भी वह अपनी पेंशन से गरीब लोगों की मदद कर देती है। नवाब और मोतीबाई की बातचीत द्रष्टव्य है–
''रानी साहब की पेंशन से बहुत लोगों को सहारा मिलता है, इसलिए बिचारी को मुश्किल का सामना करना पड़ता होगा।'
'जरूर मगर वह बहुत उदार है। उनका निजी खर्च तो बहुत कम है। दान–पुण्य में बहुत दे डालती है।' [25]
जब एलिस ने झाँसी पर अधिकार जमाना शुरू कर दिया तो सुंदर, मुंदर और काशी आभूषण उतार आयी थीं और उनकी आँखों में आँसू थे तब रानी ने इन्हें समझाया–
''...इतने बड़े मुगल सम्राट को ताराबाई कैसे परास्त कर सकीं? उन्होंने स्वराज्य की बागडोर को कैसे उठाया? रो–रोकर? कपड़े और गहने पफेंक–पफेंककर?
भूखों मर–मरकर? और सोचो जीजाबाई को पति का सुख नहीं मिला। उन्होंने छत्रपति को पाला। काहे के लिए?'' [26]
इसके आगे रानी समझाती हैं ''यदि हिन्दुस्तान में कोई भी उस पवित्र काम को अपने हाथ में न ले तो भी मैंने अपने कृष्ण के सामने अपनी आत्मा के भीतर इसका बीड़ा उठाया हैं करूंगी और अवश्य करूंगी...जिस स्वराज्य धरा को आगे बढ़ा जाऊंगी वह अक्षय रहेगी।'' [27]
अंग्रजों की हिन्दुस्तानी फौज में फूट पड़ गयी थी। गार्डन ने रानी से सहायता मांगी
''हमारी स्त्रियों और बच्चों को अपने महल में आश्रय दे दीजिए।'
रानी ने धीरे से परंतु दुढ़ स्वर में मुंदर से कहा–
'हमारी लड़ाई अंग्रेज पुरूषों से है उनके बाल–बच्चों से नहीं...कह दो गार्डन से कि स्त्रियों और बालकों को तुरंत महल में भेज दे।'' [28]
इस प्रकार रानी ने उनकी सहायता की।
रानी ने मानवीय मूल्य को छोड़ा नहीं, स्त्री चाहे अंग्रेज की हो, उसे सम्मान दिया। रानी ने उनको भोजन करवाया और ढाढस दिया।
दूसरे दिन भी लड़ाई चलती रही तो रानी ने अंग्रजों की स्त्रियों और बच्चों की सहायता की–
''रानी ने दो मन रोटियाँ तत्काल बनवाई। काशी बाई से कहा 'तू इन रोटियों को किसी प्रकार अंग्रेजों के पास पहुँचा दे।'' [29]
इस कार्य में काशी और सुंदर और मुंदर ने भी निडरतापूर्वक सहयोग किया।
बरुआ सागर के मुखिया और पंच रानी से डाकू सागर सिंह के आंतक के कारण याचना करने आये। इस सागर सिंह को पकड़ने में रानी ने अपने साथ कुछ सुंदर, काशी और मोतीबाई को लिया। और कौशल का परिचय दिया–
''रानी ने अपनी तलवार ऐसी कसी कि सागर सिंह की तलवार के दो टुकड़े हो गए। अपने अपने घोड़े का बहुत खींचा और दावा परन्तु उसी उसकी पीठ कर चुकी थी। मुंदर ने सागर सिंह की गरदन को ताककर तलवार उबारी कि रानी ने तुरंत कहा 'जीवित पकड़ना है।' और रानी ने इस तरकीब से अपना घोड़ा सागर सिंह की बराबरी पर किया कि वह सट गया।
रानी ने सागर सिंह की कमर में अपना हाथ डाला। मुंदर समझ गई कि क्या करना है। दूसरी ओर से उसने अपना हाथ उसकी कमर में लपेट दिया और झटका देकर घोड़े से उठा लिया।'' [30]
अपनी सत्ता पुनः प्राप्त कर रानी ने अपनी सेना का पुनर्गठन कर दिया। रानी की हिदायत थी ''सेना को सारे राज्य की जनता अपना समझे और यह तभी हो सकता था जब सेना में सब जातियों के लोग रखे जाये।'' [31]
लेकिन राज्य को हाथ में लेने के 5 दिन बाद करेरा के किले पर सदाशिवराव नेवालकर ने हमला किया तो इस लड़ाई में काशी, मुंदर, सुंदर के साथ रानी ने अद्‌भुत युद्ध किया–
''वह इतने वेग के साथ अपने घुड़सवारों को लेकर करेरा पहुँची कि सदाशिवराव को लड़ने तक का मौका नहीं दिखा।
रानी ने पहुँचते ही करेरा के किले को ऐसा घेरा कि सदाशिव ने मुश्किल से भागकर अपनी जान बचाई।....रानी ने सदाशिव को नटवर में घेर लिया और पकड़कर झांसी ले आई तथा झांसी के किले में कैद कर दिया।'' [32]
रानी पर कष्टों की कमी न थी। पहले सदाशिव राव अपने हकों का जता रहा था उससे रानी ने विजय प्राप्त की फिर नत्थे खाँ बीस हजार की सेना लेकर आ गया और किला, नगर और शस्त्रों के समर्पण की मांग करने लगा। झांसी में कुछ तैयारी न थी। रानी ने कहा ''युद्ध संचालन मैं करती हूँ। नत्थे को भागने के लिए कठिनता से गली मिलेगी।'' [33]
रानी अपनी सेना में सभी जातियों और पुरुष–स्त्रियों को रखना चाहती है। वह जवाहर सिंह को कहती है।
''मैं चाहती हूँ कि सब जातियों के चुने हुए लोगों को तोप–बंदूक का चलाना सिखाया जाए।'
जवाहर सिंह ने बिना उत्साह दिखाए कहा–'यह काम जारी है सरकार। रानी 'मैं अपनी सहेलियों और कुछ अन्य स्त्रियों को बहुत अच्छा गोलंदाज बनाना चाहती हूँ।'' [34]
युद्ध के सवाल पर रानी ने काशीबाई को कहा– ''अपने जीवन और धर्म की रक्षा के लिए, अपनी संस्कृति और कला को बचाने के लिए। नहीं तो युद्ध एक व्यर्थ का रक्तपात ही है.....उस खेल को ऐसा खेलो कि अंग्रेजों के छक्के छूट जाएँ और यह देश उनकी फांस से मुक्त हो जाए।'' [35]
स्त्रियों की सेना का सविस्तार वर्णन सुनकर रोज हैरान हो गया। हिन्दुस्थान की स्त्रियाँ सिपाहीगिरी का काम करती है।'' [36]
गुलमुहम्मद बोला–'बाई जहाँ की औरत लड़ने को ऐसा तैयार है, वहाँ का मरद तो आसमान को चक्कर खिला देगा।'' [37]
रानी ने झांसी की स्त्रियों को कहा–
''तुम में अनेक युद्ध विद्या सीख गई हो। जो जिस कार्य को कर सके, वह उस कार्य का हाथ में ले। लड़ने वालों के पास गोला, बारूद, खाना, पानी इत्यादि ठीक समय पर पहुँचता रहना चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर हथियार भी उठाना पड़ेगा। तुम में से कोई मेरी बहिन के बराबर है, कोई माता के समान। अपने बाप की, अपने ससुर की, अपने पति की, अपने भाई की लाज तुम्हारे हाथ है। ऐसे काम करना जिनसे पुरखों को कीर्ति मिले। मैंने नगर का प्रंबध कर दिया है, तुम्हारी आवश्यकता मुझको किले में है। मेरे साथ रहना। बीच–बीच में छुट्‌टी मिल जाया करेगी तब घर ही आया करोगी।'' [38] रानी की बातों को स्त्रियां उत्साह के साथ व्यवहार में उतारती थी–
''झाँसी की अनेक स्त्रियों ने उसी दिन रानी के पास सैनिक वेश में अपना निवास बनाया...वे ही स्त्रियाँ सैनिक वेश में तलवार बांधे, बंदूक कंधे पर साधे, चुपचाप अपना–अपना कर्तव्य पालन करने में निरत हो गयीं। उनका श्रृंगार और वाक् युद्ध सब तलवार की म्यान में समा गया।'' [39]

रोज ने जब हमला किया तो हमलें में पुरुषों के साथ स्त्रियाँ भी रानी के साथ थी–

''स्त्रियाँ गोलंदाजों के पास पहुँच गईं और काम में मदद करती रहीं।'' [40]

युद्ध में 'मुंदर ने रघुनाथ सिंह की जगह ली। सुंदर ने दुबहाजू की, मोतीबाई ने खुदाबख्श की।'' [41]

ये स्त्रियां अनवरत निडरता से मोर्चों पर खड़ी रहीं–

''चौथे प्रहर से लेकर संध्या तक स्त्री तोपचियों ने दृढ़तापूर्वक काम किया।'' [42]

रोज देखता है

''ओह, स्त्रियाँ तोप चला रही हैं। स्त्रियाँ गोला–बारूद ढो रही हैं। कुछ खाना–पीना बाँट रही हैं। टूटी हुई दीवारों और कंगूरों की मरम्मत में मदद दे रही हैं।'' [43]

युद्ध में बख्शिन की निडरता भी देखने योग्य थी–

''बख्शिन जवाब पर जवाब दे रही थी। बारुद और धुएँ से उसका सुंदर चेहरा काला पड़ गया था। पसीने की रेखाओं से जितना चेहरा घुल गया था, केवल उतना ही उसके स्वर्ण वर्ण को प्रकट कर रहा था।'' [44]

युद्ध क्षेत्र में किसी प्रकार की स्त्री के साथ घटना हो जाती तो रानी बड़े धैर्य से उसे संभालती थी–सुंदर ने दुल्हाजू के व्यवहार की शिकायत की तो रानी ने कहा–

''तुझे अनुमति देती हूँ कि यदि वह फिर कोई बेहूदी बात रहे तो अकेले में जूते लगा देना तू उसे कुश्ती में पछाड़ सकती है।'' [45]

रानी स्त्रियों के स्वाभिमान को गिरने नहीं देती थी–

''रानी की स्त्री सेना इस तरह काम कर रही थी जैसे देवी दुर्गा ने अनेक शरीर और अनेक रूप धारण कर लिये हों।'' [46]

स्त्रियां बिना थके काम में जुटी रहीं–

''मरम्मत करने का काम पुरुष कर रहे थे और पत्थर तथा चूना इत्यादि देने का काम स्त्रियाँ....।'' [47]

सैंयर फाटक पर रोज के अफसर हमला करते हैं तो मोतीबाई ने अद्भुत शौर्य का परिचय दिया–

''...इतने में तलवार लिये मोती बाई टूट पड़ी। लैफ्रिटनेंट ने पिस्तौल चलाई। खाली गई। मोती बाई ने एक ही बार में उसको खत्म कर दिया। दूसरे लैफ्रिटनेंट ने तलवार के वार किये परंतु मोतीबाई ने उसको समाप्त कर दिया।'' [48]

झलकारी रोज के सामने रानी की तरह बनकर चली जाती है क्योंकि–

''उसको विश्वास था कि मेरी जाँच–पड़ताल और हत्या में जब तक अंग्रेज उलझेंगे तब तक रानी को इतना समय मिल पाएगा कि काफी दूर निकल जाएंगी ....झलकारी रोज के समीप पहुँचाई गई। वह घोड़े से नहीं उतरी...रोज की कुछ देर के लिए धोखे में आ गया।'' [49] इस प्रकार स्त्रियां अपनी जान जोखिम में डालकर भी मातृभूमि की रक्षा के लिए लड़ती रहीं।

रानी के साथ आखिर में मुंदर भी साथ थी। रानी ने देशमुख की सहायता के मुंदर को इशारा किया। एक अंग्रेज सवार ने मुंदर पर पिस्तौल दागी ''भाई साहब मैं मरी।'' [50] इस प्रकार अपने को न्यौछावर करने में ये नारी चरित्र पुरुषों से पीछे नहीं रहें।

इस प्रकार 'झाँसी की रानी' उपन्यास में उपान्यासकार वृन्दावन लाल वर्मा ने इतिहास से ऐसे नारी चरित्रों को हमारे सामने रख दिया है जो वास्तव में शौर्य, साहस, वीरता, निडरता की अक्ष्य मूर्ति हैं। यह चरित्र आज भी नारी समाज के लिए बहुत प्रेरक बन पड़ें हैं।

संदर्भ

1. झाँसी की रानी–वृन्दावन लाल वर्मा पृष्ठ 20
2. वही पृष्ठ 21
3. वही पृष्ठ 23
4. वही पृष्ठ 23
5. वही पृष्ठ 25
6. वही पृष्ठ 25
7. वही पृष्ठ 26
8. वही पृष्ठ 26
9. वही पृष्ठ 26
10. वही पृष्ठ 30
11. वही पृष्ठ 33
12. वही पृष्ठ 30
13. वही पृष्ठ 39
14. वही पृष्ठ 39
15. वही पृष्ठ 48
16. वही पृष्ठ 40
17. वही पृष्ठ 49
18. वही पृष्ठ 50
19. वही पृष्ठ 44
20. वही पृष्ठ 108
21. वही पृष्ठ 104
22. वही पृष्ठ 55
23. वही पृष्ठ 66
24. वही पृष्ठ 54
25. वही पृष्ठ 63
26. वही पृष्ठ 51
27. वही पृष्ठ 51
28. वही पृष्ठ 76
29. वही पृष्ठ 77
30. वही पृष्ठ 94
31. वही पृष्ठ 82
32. वही पृष्ठ 83
33. वही पृष्ठ 98
34. वही पृष्ठ 105
35. वही पृष्ठ 107
36. वही पृष्ठ 112
37. वही पृष्ठ 115
38. वही पृष्ठ 114
39. वही पृष्ठ 116
40. वही पृष्ठ 117
41. वही पृष्ठ 118
42. वही पृष्ठ 118
43. वही पृष्ठ 123
44. वही पृष्ठ 124
45. वही पृष्ठ 128
46. वही पृष्ठ 132
47. वही पृष्ठ 132
48. वही पृष्ठ 143
49. वही पृष्ठ 156
50. वही पृष्ठ 170